इकाई-8

कृषि और खेतिहर समाज

एग्रीकल्चर (कृषि) लैटिन भाषा के दो शब्दों 'एग्रोस' तथा 'कल्चर' से बना है। एग्रोस का अर्थ है 'भूमि' और 'कल्चर' अर्थ है 'जुताई'। इस प्रकार कृषि (एग्रिकल्चर) का अर्थ 'भूमि की जुताई' से है। यद्यपि कृषि के अंतर्गत पशुपालन, वानिकी और मत्स्यन भी शामिल है।

कृषि की शुरूआत नव पाषाण काल में ही हुई थी, लेकिन सिन्धु घाटी संस्कृति विशेषकर कांस्य युग से कृषि में नियोजित विकास देखने को मिलता है। सिन्धु नदी मिस्र की नील नदी की अपेक्षा कहीं अधिक जलोढ़ मिट्टी बहाकर लाती थी और इसे बाढ़ वाले मैदानों में छोड़ जाती थी। जिससे पैदावार बढ़ जाती थी। हड़प्पा काल में राजस्थान में हल का प्रयोग का प्रमाण मिलता है। हड़प्पावासी शायद लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे। इस हल को आदमी खींचते थे या बैल इस बात का पता नहीं है। फसल काटने के लिए शायद पत्थर के हँसियों का प्रयोग होता था। नहरों या नालों से सिंचाई की परिपाटी नहीं थी।

सिन्धु सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, राई, कपास, मटर अनाज आदि पैदा करते थे। वे दो किस्म की गेहूँ और जौ उपजाते थे। वनावाली में मिला जौ उत्तम किस्म का है। इनके अलावा वे तिल और सरसों भी उपजाते थे। परन्तु हड़प्पा कालीन लोथल में रहने वाले हड़प्पाइयों की स्थिति भिन्न रही है। लगता है कि लोथल के लोग 1800 ई० पू० में ही चावल उपजाते थे जिसका अवशेष वहाँ पाया गया है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में और शायद कालीबंगा में भी अनाज को बड़े-बड़े कोठारों में जमा किया जाता था। संभवत: किसानों से राजस्व के रूप में अनाज लिया जाता था। वे पारिश्रमिक चुकाने और संकट की घड़ियों में काम के लिए अनाज को कोठारों में जमा किया करते थे। यह बात हम मोसोपोटामिया के नगरों के दृष्टान्त से कह सकते हैं, जहाँ मजदूरी में जौ दिया जाता था।

सबसे पहले कपास पैदा करने का श्रेय सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों को है। चूँकि कपास का उत्पादन सबसे पहले सिन्धु क्षेत्र में ही हुआ। इसीलिए यूनान के लोग इसे सिन्डन (Sindon) कहने लगे जो सिन्धु शब्द से उद्भूत हुआ है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारतीय समाज एक कृषक समाज है। इसलिए कृषि भारतीय अर्थ-व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। लगभग दो तिहाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। जहाँ विश्व की 11% भूमि कृषि योग्य है, वहीं भारत की कुल भूमि का 51% भाग कृषि योग्य है। 'कृषि' भारत के कुल राष्ट्रीय आय में लगभग 35% योगदान करता है। भारत के पास विशाल स्थल क्षेत्र, उपजाऊ भूमि का उच्च प्रतिशत है। परन्तु कृषि का एक दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह है कि गुणवत्ता एवं मात्रा दोनों स्तर पर यह प्रत्येक वर्ष अनिश्चित रहता है। कृषक अंतिम समय तक अपने फसल के उत्पादन के लिए निश्चिंत नहीं रहते हैं।

भारत में कृषि जीवन की रीढ़ है। कृषि पर अत्यधिक जनसंख्या का बोझ, आधुनिक तकनीकी की जानकारी का अभाव, सिंचाई के साधनों की कमी आदि के कारण आजादी के पहले एवं आजादी के तुरन्त बाद श्रम की तुलना में उत्पादन काफी कम था। लेकिन आजादी के बाद भारत सरकार के प्रयास से उत्पादन में काफी बढ़ोत्तरी हुई है।

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। जिसकी 80% आबादी कृषि पर ही निर्भर है। कृषि ही राज्य के लोगों की जीविका का मुख्य आधार है। इस राज्य की लगभग 70% भूमि कृषि योग्य है। इनमें से 60% शुद्ध बोये गये क्षेत्र हैं। वास्तव में कृषि उनकी जीवन पद्धति बन गयी है। बिहार में कृषि की महत्ता के अनेक कारण हैं। इसका अधिकांश मैदानी भाग कृषि योग्य है तथा सदियों से यह क्षेत्र कृषि से संबंधित रहा है। कृषि का वाणिज्यीकरण, औद्योगीकरण और आधुनिक तकनीक से परिचित न होना इसका दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है। अब भी बिहार में कृषि अधिकांशतः पुराने ही तरीके से हो रही है।

कृषि पर जनसंख्या के निरंतर बढ़ते हुए बोझ, अनुपस्थित भू-स्वामित्व, सिंचाई की कमी, छोटे और बिखरे खेत, अपर्याप्त रासायनिक खाद के प्रयोग, खेती के पुराने ढंग और उत्तम बीज की कमी के कारण यहाँ प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम है और खेती पिछड़ी अवस्था में है। मानसूनी वर्षा पर निर्भरता के कारण यहाँ की कृषि को "मानसून के साथ जुआ" कहा गया है। कृषि-विपणन की दोषपूर्ण व्यवस्था के कारण किसानों को फसलों की उचित कीमत नहीं मिल पाती है। इन्हीं कारणों से बिहार के किसानों की दशा दयनीय है और वे अपने खेतों को छोड़कर दूसरे प्रांतों में आजीविका के लिए शरण लेने को बाध्य हैं। बिहार की कृषि गहन निर्वाहक प्रकार की है, जिसके अन्तर्गत वर्ष में चार फसलें बोयी और काटी जाती है। जैसे-

1. भदई फसलें : ये फसलें मई-जून में बोयी जाती है और अगस्त-सितम्बर में काट ली जाती है। मक्का, ज्वार, बाजरा, जूट, उड़द, सनई, मडुआ इत्यादि इस मौसम की मुख्य फसले हैं।

2. अगहनी फसलें : इनकी बुआई जुलाई-अगस्त में होती है और नवम्बर-दिसम्बर में ये तैयार हो जाती है। धान, कुलथी, तिल, आलू, तेलहन, सब्जी, मकई, कपास, गन्ना, पटसन इत्यादि इसकी मुख्य फसलें हैं।

3. रबी फसलें : ये बसंत ऋतु की फसल है, जिनकी बुआई अक्टूबर-नवम्बर में होती है तथा ये फसलें मार्च-अप्रैल तक तैयार हो जाती हैं। इन फसलों के उत्पादन में सिंचाई की अधिक आवश्यकता पड़ती है। गेहूँ सर्वप्रमुख रबी फसल है। गेहूँ के अतिरिक्त जौ, चना, मटर, सरसों, मसूर, खेसारी, अरहर इत्यादि की फसलें भी बड़ी मात्रा में उपजाई जाती है।

4. गरमा फसलें : ये ग्रीष्मकालीन फसलें हैं, जिनकी खेती उन क्षेत्रों में होती है जहाँ नियमित सिंचाई की व्यवस्था है। इसकी बुआई मार्च-अप्रैल में होती है और कटाई जून के महीने में होती है। ग्रीष्मकालीन धान, मकई, मूँग, चना, आम, केला, तरबूज, ककरी, सब्जियाँ एवं प्याज इस मौसम की मुख्य फसलें हैं।

बिहार में फसलों की विविधता है। फसलों को उनकी प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जाता है–

1. खाद्य फसलें (Food crops) : धान, गेहूँ, मक्का, ज्वार-बाजरा, चना, जौ, दलहन, तेलहन इत्यादि।

2. व्यावसायिक या नकदी फसलें (Commercial or cash crops) : इसके अन्तर्गत गन्ना, पटसन, कपास, तम्बाकू, आलू, तेलहन तथा दलहन, लाल मिर्च मसालें इत्यादि आते हैं।

3. पेय फसलें (Beverage Crops) : इसके अन्तर्गत चाय आती है, जिसकी खेती किशनगंज में की जाने लगी है।

4. रेशेवार फसलें- (Fibrous crops) : कपास, जूट, रेशम इत्यादि।

5. फल (Fruit crops) : आम, केला, लीची, अमरूद इत्यादि।

6. मसालें (Spices) : लालमिर्च, लहसुन, हल्दी, धनिया, मेंथी इत्यादि।

चावल या धान (Rice or Paddy) : चावल बिहार की सर्व प्रमुख फसल है।

जलवायु : धान उष्णार्द्र जलवायु की फसल है।

तापमान : 20°c से 200º c

मिट्टी : दोमट (केवाल या चीका)

1999-2000 के आँकड़ों के अनुसार धान के अन्तर्गत सर्वाधिक भूमि रोहतास जिला में है।

गेहूँ (Wheat) : गेहूँ बिहार का दूसरा प्रमुख खाद्यान्न है।



जलवायु	:	शीतोष्ण कटिबंधीय
तापमान	:	10°c से 15°c (बोते समय)
		20°c से 30°c (पकते समय)
वर्षा	:	50 सेमी से 75 सेमी तक
मिट्टी	:	हल्की दोमट मिट्टी
क्षेत्र	:	रोहतास, पूर्वी चम्पारण, सिवान

मकई (Maize) : मकई या मक्का बिहार के खाद्यान्नों में चावल और गेहूँ के बाद तीसरे स्थान पर है।

जलवायु	:	गर्म एवं आर्द्र
तापमान	:	25°c से 30°c तक
वर्षा	:	50 सेमी से 100 सेमी तक
मिट्टी	:	नाइट्रोजन युक्त गहरी दोमट मिट्टी
क्षेत्र	:	सारण,सिवान, गोपालगंज, मुजफ्फरपुर, वैशाली, पूर्वी चम्पारण, प० चम्पारण, समस्तीपुर, बेगुसराय, खगड़िया, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया, कटिहार इत्यादि क्षेत्रों में होता है।

विभिन्न प्रकार की खेतियों का इतिहास

भारत की लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर निर्भर हैं। अर्थात् भारत का समाज खेतिहर समाज है। जब कृषि की जानकारी हुई तो लोगों के पास साधन की कमी थी। क्योंकि कृषि एक संयोग मात्र है।

झूम की खेती : सभ्यता के शुरूआत में जहाँ जंगल अधिक था वहाँ लोगों ने जंगल को काटकर खेती करना प्रारम्भ किया। आज भी पहाड़ी क्षेत्रों में बहुत से आदिवासी समाज में झूम खेती

(Jhoom Cultivation) प्रचलित है। क्योंकि आदिवासी समाज पृथ्वी को अपनी माता समझते हैं और उसपर हल नहीं चलाना चाहते हैं। अतः वे वर्षा से पहले जंगल में आग लगा देते थे और उसके राख पर बीज छिड़क देते थे। वर्षा होने पर उस बीज से पौधे निकल आते थे। इस प्रकार अगले वर्ष में नीचे की तरफ आग लगा कर खेती करते थे। वैसे इस खेती से पर्यावरण पर असर पड़ता है।

विभिन्न प्रकार की खेतियों

- झूम खेती
- पारम्परिक खेती
- गहन खेती
- फसल चक्र
- मिश्रित खेती
- रोपण या बागानी खेती

पारम्परिक खेती : इसके तहत, कृषक पारम्परिक खेती करते थे। फसल उत्पादन से ही कुछ बीज वे अगले फसल के लिए रख देते थे। सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहते थे। भारत में वर्षा मानसून से होती है जो अनिश्चित रहती है। कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि। कृषि के अधिकांश कार्य जानवरों के द्वारा किया जाता था। इस प्रकार पारम्परिक कृषि से उत्पादन अधिक नहीं होता था। एक ही बीज को बराबर लगाने से उसकी गुणवत्ता समाप्त हो जाती थी। पारम्परिक खेती में काफी समय लगता था तथा मिट्टी की उर्वरा शक्ति: क्रमशः कम होती जाती थी। आज भी इस तरह की खेती प्रचलित है।

आजादी से पूर्व ब्रिटिश सरकार की नीति, भू-व्यवस्था की गड़वस्था की गड़बड़ी आदि के कारण उत्पादन काफी कम होता गया। नील आदि की खेती की बाध्यता के कारण जमीन बंजर होती गई। जिससे बराबर आकाल आने लगा। परन्तु आजादी के बाद सरकार की भू-व्यवस्था में परिवर्तन, सिंचाई के साधनों आदि में विकास से कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई।

1960 के दशक में हरित-क्रांति के कारण खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत बढ़ोत्तरी हुई। यहाँ से कृषि में उच्च तकनीकी एवं वैज्ञानिक पद्धति का प्रवेश होता है। **पादप-संकरण द्वारा उच्च प्रकार के बीजों के किस्मों का विकास किया गया।** उर्वरक, पीड़क नाशी, खरपतवार नाशी के प्रयोग एवं बहुउद्देश्यीय परियोजनाओं के द्वारा सिंचाई में विकास तथा आधुनिक यंत्रों द्वारा कृषि कार्य के कारण कृषि एक व्यवसाय के रूप में विकसित हुआ।

गहन खेती : जिन क्षेत्रों में सिंचाई संभव हुई है, उन क्षेत्रों में किसान उर्वरकों और कीटनाशकों का बड़े पैमाने पर उपयोग करने लगे हैं। कृषि की विभिन्न प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए मशीनों के प्रयोग द्वारा कृषि का यंत्रीकरण हो गया है। इससे प्रति हेक्टेयर उपज में कृषि का विकास हुआ है। गहन खेती का तात्पर्य है, एक ही खेत में अधिक फसल लगाना।

फसल चक्र : बराबर एक ही प्रकार के फसल लगाने से खेत की उर्वरा शक्ति क्षीण होने लगती है। अतः, इसके लिए दो खाद्यान्न फसलों के बीच एक दलहनी कुल के पौधों को लगाया जाता है। जिसे फसल चक्र कहते हैं। दलहनी कुल के पौधों की जड़ की गाँठ में नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु होते हैं, जो वातावरण के नाइट्रोजन को स्थिरीकृत कर भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं। आजकल विभिन्न प्रकार के उर्वरक खेत में डाल कर भूमि की शक्ति बढ़ायी जाती है।

मिश्रित खेती : एक ही खेत में समान समय में दो या तीन फसल लगाने को मिश्रित खेती कहते हैं। इससे एक ही समय में अधिक एवं विभिन्न प्रकार के फसलों की प्राप्ति होती है।

रोपण या बागानी खेती : रोपण कृषि एक विशेष प्रकार की झाड़ी कृषि अथवा वृक्ष कृषि है। इसे 19 वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने प्रारंभ किया था। यह एकल फ़सल कृषि है। इसमें रबर, चाय, कहवा, कोको, मसाले, नारियल और फलों की फसलें जैसे- सेब, अंगूर, संतरा, आदि उगाई जाती हैं। इस प्रकार की खेती में अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। कई रोपण कृषि क्षेत्रों जैसे चाय, कहवा और रबर की बागानों या उनके निकट ही उन्हें संसाधित करने की फैक्ट्री लगाई जाती है। इस प्रकार की कृषि उत्तर-पूर्वी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों, पश्चिम बंगाल के उप हिमालयी क्षेत्रों तथा प्रायद्वीपीय भारत की नीलगिरी, अन्नामलाई व इलायची की पहाड़ियों में की जाती है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इसकी जरूरत :

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में विभिन्न प्रकार की खेतियों की काफी आवश्यकता है। क्योंकि ग्रामीण जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि पर ही निर्भर रहता है। जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ़ रही है एवं अधिक आय के लिए कृषकों को आधुनिक ढंग से विभिन्न प्रकार की खेती करने की आवश्यकता है। कृषि के आधुनिकीकरण से मृदा की उर्वरा शक्ति तो पुनः प्राप्त हो ही जाती है साथ-साथ अत्यधिक उत्पादन से अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होती है। नकदी फसल करने से उद्योग में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ कृषकों को अच्छी आमदनी भी होती है।



कपास की खेती का दृश्य

वर्तमान समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन

वर्तमान समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आया है। आधुनिक तकनीक एवं जागरूकता के ग्रामीण कृषक अपने कृषि कार्य में परिवर्तन कर रहे हैं। आधुनिक कृषि के कारण

ग्रामीण कृषक अब इस प्रकार का फसल लगा रहे हैं जिससे अधिक आमदनी प्राप्त हो । सरकार भी वैसे फसल लगाने के लिए कृषक को प्रोत्साहन दे रही है। कृषकों के आर्थिक लाभ के लिए सरकार ऋण की मुहैया करवाती है एवं फसल बीमा के माध्यम से क्षति होने पर उसकी पूर्ति करती है। इस प्रकार के उत्पादन से उद्योगों धंधे में सहायता मिलती है एवं लोगों को रोजगार भी प्राप्त होता है।

बिहार में होनेवाली प्रमुख व्यवसायिक फसलें :

केला : बिहार के हाजीपुर एवं नवगछिया का इलाका केला की खेती के लिए उपयुक्त है। यहाँ की मिट्टी एवं जलवायु केला के उपयुक्त है। इस प्रकार, इस इलाके में केला उत्पादन एक व्यवसाय का रूप ले रहा है। फलतः ग्रामीण अर्थव्यवस्था काफी सुदृढ़ हो गई है।



केला की खेती

लीची : मुजफ्फरपुर का इलाका शाही लीची के लिए लोकप्रिय है। यहाँ के किसान बड़े पैमाने पर लीची के बागान लगाकर अपनी आदमी बढ़ा रहे हैं। शाही लीची का अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में माँग है। लीची का खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में भी काफी उपयोग है।

गन्ना : गन्ना की खेती के लिए बिहार पूर्व से मशहूर है। बिहार में पूर्णिया, सहरसा, पश्चिमी चम्पारण आदि का इलाके में गन्ना की खेती बड़े पैमाने पर होती है। गन्ना एक उद्योग आधारित फसल है। इससे चीनी, गुड़ आदि प्राप्त होते हैं। इस प्रकार गन्ना की खेती से बड़े पैमाने पर आमदनी होती है। इसके अलावे ग्रामीण कृषक गुड़ आदि के कुटीर उद्योग लगाकर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।



गन्ना की खेती

कृषि का भारतीय अर्थव्यवस्था में काफी बड़ा योगदान है। फिर भी कृषकों की स्थिति उतनी अच्छी नहीं है। बहुत जगह कृषकों को आत्महत्या तक करनी पड़ती है। अतः सरकार को इस ओर ध्यान आकृष्ट करना होगा। कृषि को उद्योग का दर्जा देकर कृषकों की स्थिति में सुधार लाया जा सकता है। कृषि कार्य को सम्मान देने के लिए आने वाली पीढ़ी को कृषि के प्रति लगाव पैदा करना होगा। उनके शैक्षणिक पाठ्यक्रम में कृषि से संबंधित अध्याय जोड़ने होंगे। कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी के लिए तकनीकी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की जरूरत है।

कृषि सामाजिक परिर्वतन का माध्यम हो सकता है। सामाजिक परिर्वतन से कृषि की पैदावार अधिक होगी। कृषि के अधिशेष उत्पादन एवं उद्योग आधारित कच्चे माल का अत्यधिक उत्पादन से कृषिकों की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी। अर्थव्यवस्था अच्छी होने से उनके रहन-सहन का स्तर बढ़ेगा, उच्च शिक्षा की तरफ लोग मुखातिब होंगे। आमदनी बढ़ने से यंत्रीकृत कृषि शुरू होगी। इस प्रकार समाज में परिवर्तन आएगा।

कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण

कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कृषकों के लिए काफी लाभदायक होगा। पारंपरिक खेती से किसानों की उपज अच्छी नहीं होती थी। जहाँ एक ही बीज का बार-बार प्रयोग करने से बीज की गुणवत्ता क्षीण हो जाती थी, वहीं एक ही प्रकार के खाद्यान्न लगाने से मृदा की उर्वरा शक्ति भी क्षीण पड़ जाती थी। सिंचाई के लिए वर्षा निर्भरता से या तो अनावृष्टि के कारण फसल सूख जाता था या अतिवृष्टि के कारण फसल नष्ट हो जाते थे। लेकिन वैज्ञानिक पद्धति के आने से उत्पादन में अत्यधिक बढ़ोत्तरी हुई। पादप-संस्करण के द्वारा कम वांछित गुण वाले पौधा काफी अधिक वांछित गुण वाले पौधों के साथ परगण करवा कर उन्नत किस्म का बीज प्राप्त किया गया। इस बीज से कम समय में अच्छी फसल प्राप्त होती है। उर्वरक का उत्पादन होने से खेतों की उर्वरा शक्ति पुनः प्राप्त हो जाती है। कीटनाशी, खरपतवारनाशी आदि का छिड़काव करके फसल को नष्ट होने से बचाया जा सकता है।

सिंचाई के तरह-तरह के साधन होने से पौधों में नमी हमेशा बनी रहती है। आधुनिक यंत्रों के कारण समय पर कृषि कार्य संभव हो पाता है एवं समय की बचत होती है। फसल चक्र, बहुफसली कृषि, मिश्रित खेती आदि के द्वारा कृषि में आशातीत वृद्धि हुई। इसी कारण 1960 के दशक में हरित क्रान्ति आयी। इस प्रकार कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कृषि के लिए काफी लाभदायक है।

अभ्यास

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. दलहन फसल वाले पौधे की जड़ की गाँठ में पाया जाता है।
   (क) नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु (ख) पोटाशियम स्थिरीकरण जीवाणु
   (ग) फॉस्फेटी स्थिरीकरण जीवाणु (घ) कोई नहीं।
2. शाही लीची बिहार में मुख्यतः होता है।
   (क) हाजीपुर (ख) समस्तीपुर
   (ग) मुजफ्फरपुर (घ) सिवान
3. रबी फसल बोया जाता है।
   (क) जून-जुलाई (ख) मार्च-अप्रैल
   (ग) नवम्बर (घ) सितम्बर-अक्टूबर
4. केला बिहार में मुख्यतः होता है।
   (क) समस्तीपुर (ख) हाजीपुर
   (ग) सहरसा (घ) मुजफ्फरपुर
5. चावल, बिहार के किस जिले में सबसे ज्यादा उत्पादन करता है।
   (क) सिवान (ख) रोहतास
   (ग) सीतामढ़ी (घ) हाजीपुर
6. गरमा फसल किस ऋतु में होता है।
   (क) ग्रीष्म ऋतु (ख) शरद ऋतु
   (ग) वर्षा ऋतु (घ) वसंत ऋतु
7. रेशेदार फसल को चुनें-
   (क) आम (ख) लीची
   (ग) धान (घ) कपास
8. अगहनी फसल को चुनें-
   (क) चावल (ख) जूट
   (ग) मूँग (घ) गेहूँ

II. उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. कपास एक .... फसल है।
2. मक्का .... फसल है।

3. भारत एक .... प्रधान देश है।

4. भारत की .... तिहाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर है।

5. एग्रिकल्चर लैटिन भाषा के दो शब्दों .... तथा .... से बना है।

6. चावल सर्वाधिक .... जिला में उत्पादन होता है।

7. बिहार की कृषि गहन निर्वाहक प्रकार की है, जिसके अन्तर्गत वर्ष में .... फसलें बोयी या काटी जाती है।

8. चावल के लिए .... जलवायु की आवश्यकता है।

9. गेहूँ के लिए .... मिट्टी चाहिए।

10. मकई के लिए .... जलवायु की आवश्यकता है।

III. लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. भारत में मुख्यतः कितने प्रकार की कृषि होती है?
2. रबी फसल और खरीफ फसल में क्या अन्तर है?
3. पादप-संकरण क्या है ?
4. मिश्रित खेती क्या है?
5. हरित क्रांति से आप क्या समझते हैं?
6. गहन खेती से आप क्या समझते हैं?
7. झूम खेती से आप क्या समझते हैं?
8. फसल चक्र के बारे में लिखें।
9. रोपण या बागानी खेती से आप क्या समझते हैं?
10. वर्तमान समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के उपाय बतावें।

IV. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

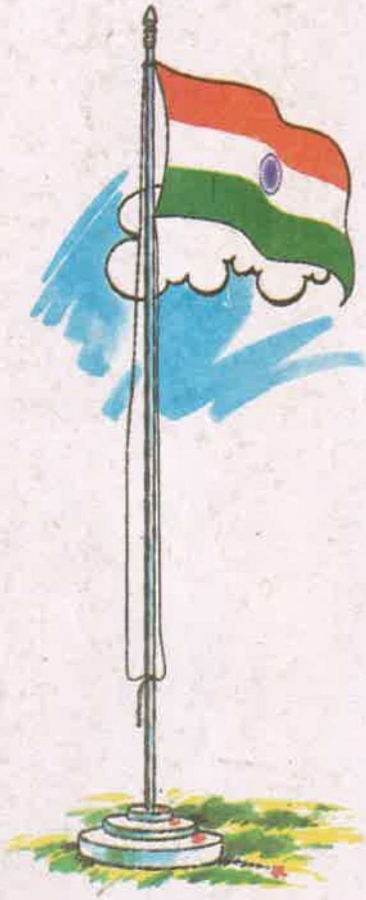
1. भारत एक कृषि प्रधान देश है, कैसे?
2. कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कृषि के लिए लाभदायक है, कैसे?
3. बिहार की कृषि "मानसून के साथ जुआ" कहा जाता है, कैसे?
4. कृषि सामाजिक परिवतन का माध्यम हो सकता है, कैसे?
5. कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण क्या है? समझावें।



वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥





राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना–1
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1